स्नातक कार्यक्रम

बी.ए. संस्कृत (विशेष) कार्यक्रम

पाठ्यक्रम -BSKC -106

काव्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना

BASKH/BAFSK

सत्रीय कार्य

(जनवरी, 2026 एवं जुलाई, 2027 सत्रों के लिए)

BSKC -106

काव्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना

मानविकी विद्यापीठ
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली- 110068

स्नातक कार्यक्रम

सत्रीय कार्य (2026-27)

पाठ्यक्रम शीर्षक- काव्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना

पाठ्यक्रम कोड : **BSKC -106/2026-27**

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य **(TMA)** है। सत्रीय कार्य के लिए **100** अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जायेंगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये :

1.) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए।
2.) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

दिनाँक : .....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन: सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाईयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ विशेष बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढ़ग से व्यवस्थित कीजिए।

2. अभ्यास: उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबन्धात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढ़ग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढ़ग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियों न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. प्रस्तुति: जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट: याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है, अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ:

जनवरी, 2026 सत्र के लिए : 30 सितम्बर, 2026

जुलाई, 2026 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2027

सत्रीय कार्य

BSKC -106

काव्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना

पाठ्यक्रम कोड : **BSKC -106**

पाठ्यक्रम शीर्षक :

सत्रीय कार्य: **BSKC -106/TMA/2026-27**

पूर्णांक : 100

नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : –

1. संस्कृत काव्यशास्त्र की उत्पत्ति और विकास पर प्रकाश डालें । 20

अथवा

दृश्य, श्रव्य एवं मिश्र (चम्पू) का विस्तार से वर्णन करें।

2. काव्यप्रकाश के अनुसार लक्षणा शब्दशक्ति का विशद् विवेचन करें। 20

अथवा

मम्मट के काव्य लक्षण का विस्तार से वर्णन करें।

3. साहित्य दर्पण के अनुसार खण्डकाव्य, का वर्णन करें । 10

अथवा

मम्मट के अनुसार काव्य हेतु का वर्णन करें ।

4. भट्टलोल्लट के उत्पत्तिवाद विवेचन का करें । 10

अथवा

अन्विताभिधानवाद' का वर्णन करें

5. विभावना अथवा अफह्नुति अलंकार का लक्षण बताते हुए उदारण को स्पष्ट कीजिए। 10

6. निम्नलिखित श्लोक में कौन–सा अलंकार है लक्षण बताते हुए स्पष्ट कीजिए। 10

स्वप्नेषु समरेषु त्वां विजयश्रीनर्मुचित ।

प्रभावप्रभवं कान्तं स्वाधीनपितका यथा।।

अथवा

त्विय दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनोभव जवलितम।

आलोके हि हिमांशोर्विकसति कुसुमं कुमुद्वत्याः ||

7. उपजाति अथवा स्रग्धरा छंद का लक्षण देते हुए उसके उदाहरण श्लोक का स्पष्टीकरण लिखिए। 10

8. निम्नलिखित श्लोक में कौन–सा छंद है उसका लक्षण बताते हुए स्पष्टीकरण दीजिए: 10

वागार्थाविव सम्पृक्तौ वागार्थप्रतिपत्तये।

जगतः पतरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।

अथवा

जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां

जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।

तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद्दूरबन्धुर्गतोऽहं

यांचामोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।।